पढ़ने की न उम्र होती है न जगह

मंजू कुमारी

रोज़ की तरह आज भी हम मोहल्ला केन्द्र गए। यह केन्द्र *एकलव्य* द्वारा कोरोना काल में खोला गया था ताकि बच्चों की पढ़ाई जारी रह सके। हम शाम को 4:30 बजे वहाँ पहुँच गए थे। उस दिन सभी बच्चे स्कूल की छुट्टी होने के बाद गाँव में साक्षरता दिवस की रैली निकाल रहे थे, जिसकी वजह से वे केन्द्र पर देरी से आए।

हम पहुँचे तो वहाँ दो-तीन औरतें घर में बैठी हुई थीं और बातें कर रही थीं। हमें देखते हुए उन्होंने कहा, "अरे! मैडम जी आई हैं, कुर्सी लाओ।"

मैंने हँसकर बोला, "नहीं...नहीं... उसकी ज़रूरत नहीं है। हम तो कुर्सी पर ही बैठे रहते हैं, कभी-कभी मौका मिलता है नीचे बैठने का, उसको भी आप लोग छीन ले रहे हैं।"

सभी हँस दिए और उनमें से एक ने कहा, "अरे! अच्छा नहीं लगता न आप ऐसे नीचे बैठोगी तो।"

मैंने परिस्थिति को भाँपने के लिए अन्दर झाँका तो देखा संचालक साथी के पापा बिस्तर पर लेटे हुए थे।

मैंने सलोनी को बुलाया और पूछा, "क्या ये अंकल जी को देखने आई हैं?"

"हाँ दीदी, आपको बताया था न लड़ाई में पापा का सर फोड़ दिया था।"

जैसे ही उसने यह वाकया सुनाया, मेरा दिमाग एकदम सुन्न हो गया और मैं सोचने लगी - क्या आज भी गाँव में इतना आक्रोश है? गाँवों के बारे में हमारे दिमाग में जो छवि होती है, उसमें तो गाँव के लोग आपस में मिलजुलकर रहते हैं और आपसी भाईचारा देखने को मिलता है।

मैं ऐसा इसलिए भी कह रही हूँ क्योंकि गाँव में सभी के बीच एक रिश्ता बना हुआ होता है जिससे आपसी संवेदनशीलता की सम्भावना रहती है, जो शहर में शायद ही कहीं देखने को मिले।

अब यह तो नज़रिया है, आप कुछ सोच सकते हैं और मैं कुछ और।

स्कूल के प्रति नज़रिया

मैं इसी सोच में थी कि एक महिला बोली, "अरे, अब जो सरपंच बने हैं न, वो सब ठीक कर देंगे। वे स्कूल गए और सबकुछ चेक किया। पुराना भवन है, एक ही कमरा है, और-तो-और बाथरूम भी नहीं है। उनसे पहले स्कूल देखने कभी कोई नहीं गया। वे अब सब बढ़िया कर देंगे।"

दूसरी बोली, "अगर स्कूल अच्छा

साफ-सुथरा हो तो बच्चे वहाँ भाग-भाग कर जाएँ और मन भी लगे। आधे से ज़्यादा समय तो वे घर में कभी बाथरूम करने आते हैं, तो कभी पानी लेने।"

ऐसे ही बातें करते हुए हमने पूछा, "आप लोग स्कूल कब जाते हैं?"

उनका झट-से जवाब आया, "जब मोड़ा-मोड़ी शिकायत लेकर आते हैं, हम तो तब ही जाते हैं।"

इससे पहले कि मैं कुछ बोलती, दूसरी महिला बोली, "कुछ दिन पहले ही हम स्कूल गए थे क्योंकि वहाँ खीर बनाई गई थी और बच्चे ने खाने से मना कर दिया। बच्चों से पूछकर बनाना चाहिए न कि उनको क्या खाना है। और नहीं खाना तो ज़बरदस्ती से क्यों खिलाना, मैडम?"

उनमें से फिर एक महिला बोली, "कैसा मिड-डे मील, भर पेट खाना भी नहीं मिलता। कभी दो पूरी तो कभी एक ही रोटी देते हैं।"

मैंने पूछा, "आप देखकर आई हैं? और मैडम से इस मामले में बात की क्या?"

"अरे मैडम, हमारे बच्चे बताते हैं हमें। और हम क्या बात करें मैडम से? बच्चे भी मना कर देते हैं कि मैडम से कुछ मत बोलना।"

तभी एक महिला बोली, "अब मेरी बेटी को ही देख लो। अगर उसके सामने ज़रा-सा भी कुछ बोला तो गुस्साएगी और रोने लगेगी।"

मैंने बोला, "अच्छा, इतना प्यार है बच्चों को मैडम से?"

"अजी, इन सभी की प्यारी मैडम हैं वो... पता नहीं क्या जादू किया हुआ है।"

तभी वहाँ बैठी एक लड़के की माँ बोलीं, "हमने स्कूल जाकर मैडम से बस इतना बोला कि इतना समय हो गया लेकिन हमारे बेटे को कुछ आ नहीं रहा है, क्या सिखा रहे हैं आप? रोज़ एक रैली होती रहती है। इस पर मैडम ने बस इतना बोला कि 'सरकार की तरफ से ऑर्डर आया है तो करवाया जाता है और मैं अकेली हूँ, क्या-क्या करूँ'। अगले दिन से मेरे बच्चे को पीछे बैठा दिया और बात करना बन्द कर दिया, वो अलग।"

"अब मैडम भी इन्सान ही हैं। आ गया गुस्सा और निकाल दिया बच्चे पर। अकेला अध्यापक भला, करे भी तो क्या? दोनों की उम्मीद एक-दूसरे से बच्चे को सिखाने की है, लेकिन पालकों को लगता है कि सारा ज़िम्मा अध्यापकों का है और अध्यापकों को लगता है कि बच्चों को सिखाने की ज़िम्मेदारी पालकों की भी है। खैर, किसकी कितनी ज़िम्मेदारी है वो सभी जानते हैं।"

कुछ उलाहने

एक लड़का बैग लेकर आया और बोला, "नमस्ते दीदी।"

नमस्ते करते हुए मैंने पूछा, "आज क्या करवाया मैडम जी ने?"

"शुद्ध लेख करवाया दो बार और रैली निकाली।"

"ज़रा दिखाना," मैंने मुस्कराते हुए कहा।

बच्चे ने सहमते हुए नोटबुक दिखाई। उसमें तो लाल पेन से गोले ही गोले लगे हुए थे।

"ये गोले लगाने के बाद मैडम जी ने सही करवाया क्या?"

"दीदी, ये तो विनीता ने करवाया है और उसी ने चेक किया है।"

सभी महिलाएँ उसकी तरफ देखते हुए बोलीं, "मैडम जी ने चेक क्यों नहीं किया?"

कुछ बच्चे बोले, "अरे! वो दो-तीन होशियार बच्चे हैं न, वे ही हमें पढ़ाते हैं।"

ये सब बताने का मेरा मकसद यह नहीं है कि एक बच्चा दूसरे बच्चे को पढ़ा नहीं सकता, बिलकुल पढ़ा सकता है। बल्कि बच्चे एक-दूसरे से जल्दी सीखते हैं और पियर लर्निंग भी बहुत ज़रूरी है। लेकिन वह तरीका कौन-सा हो – हमें यह समझने की ज़रूरत है कि आप और मैं पियर लर्निंग किसे मान रहे हैं। अब जो चार बच्चे 'सभी बच्चों' को पढ़ा रहे हैं, उसे क्या कहेंगे?

ऐसे ही कुछ शब्द शिक्षा नीति में प्रयोग कर दिए जाते हैं, जैसे स्केफोल्डिंग, पियर लर्निंग इत्यादि। अक्सर हम बिना अभिप्राय समझे इनका प्रयोग करने लगते हैं।

सभी को स्कूल को लेकर काफी शिकायतें थीं। स्कूल में अध्यापक की कमी को लेकर भी हल्की-सी बात उठी लेकिन ज़्यादा ज़ोर तो आधारभूत संरचना एवं सुविधाओं पर था।

इसी बीच संचालक साथी बोलीं, "देखो दीदी, एक अध्यापक हैं, उनकी ड्यूटी तहसील में लगी हुई है इसलिए वे कभी आते ही नहीं हैं। मैडम ने अर्ज़ी भी दी थी लेकिन कुछ नहीं हुआ। सरपंच जी का कहना है कि वे उसी अध्यापक को स्कूल में लाएँगे।"

मैंने सभी से एक सवाल किया, "क्या आप कभी स्कूल में या सरपंच जी के पास अध्यापक की कमी के बारे में शिकायत लेकर या बातचीत करने गए हैं?"

"अरे, हम क्या पढ़े-लिखे हैं मैडम जी? हमें क्या पता कि स्कूल में और भी टीचर की ज़रूरत है।"

"अब तो आपको सब पता है न। तो अब आप वहाँ जाकर बात कर सकते हैं।"

उसके बाद हमने उनसे शाला प्रबन्धन समिति (SMC) के बारे में चर्चा की। यह क्या होती है, कैसे बनती है, कितने सदस्य होते हैं, इसका क्या काम है, आदि।

अम्मा की पढ़ाई

अब तक सभी बच्चे आ चुके थे और पालक भी साथ ही थे। मैंने सभी से कहा, "चलो! आज सभी

पढ़ते हैं और देखते हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं।"

एक बहुत ही बूढ़ी अम्मा थीं, जो बिलकुल बच्चों की तरह खुश और उत्साहित थीं। वे झट-से उठीं और बोलीं, "चलो! वैसे तो कभी मौका नहीं मिला स्कूल जाने का, लेकिन आज यह भी कर लेते हैं।" मैंने मज़ाक में कहा, "पढ़ाई में बहुत बोरियत होती है... रहने दीजिए। आइए, मेरे पास बैठ जाइए। हम सभी बातें करते हैं।"

अम्मा झट-से मेरे पास आईं, मेरा हाथ पकड़ा और बोलीं, "मैडम जी, चलिए न, हमें पढ़ना है।" यह सुनकर मैं उन सभी के साथ ऊपर गई जहाँ सभी बच्चे बैठे हुए थे।

मैंने *एकलव्य* द्वारा प्रकाशित *शलजम* नामक बड़ी किताब उठाई और कहा, "चलो, आज इसे पढ़ते हैं।"

पढ़ने का पूरा उत्साह इस वाक्य ने खत्म कर दिया, "हमें थोड़े ही आता है। पढ़े-लिखे होते तो क्या यहाँ रहते।" सभी हँसते हुए बोले, "और कहाँ रहतीं अम्मा?"

मैंने कहा, "हम यहाँ पढ़ेंगे नहीं बल्कि चित्रों को देखकर कहानी का अनुमान लगाएँगे।" उनके साथ दो छोटे बच्चे भी थे। मैंने उनके साथ शुरुआत की। धीरे-धीरे वे सभी चित्रों को देखते हुए और आपस में बातचीत करते हुए एक-दूसरे को कहानी सुनाने लगीं।

किताब के एक चित्र में बिल्ली को पेड़ पर दिखाया गया था। एक महिला ने उसे गिलहरी बोला और दूसरी ने बिल्ली। दोनों एक-दूसरे को तर्क देते हुए अपनी बात मनवाने की कोशिश करने लगीं। अन्त में मुझसे बोलीं, "मोड़ी बताओ, यह क्या है?" मैंने कहा, "आपके लिए बिल्ली और उनके लिए गिलहरी। दोनों ही ठीक हैं।" लेकिन अम्मा बोलीं, "नहीं, पढ़कर बताओ कि क्या है।"

मैंने कहा, "बिल्ली।"

उनकी खुशी सातवें आसमान पर थी जैसे उन्होंने कोई जंग जीत ली हो।

तोतली कहानी

मैंने बच्चों से कहा, "चलो, अब आप में से कोई हम सभी को एक

कहानी सुनाएगा।" मैंने कुछ बिन्दु तय कर दिए जिनको ध्यान में रखकर कहानी सुनानी थी, जैसे -

- पहले आपको चित्र को दिखाकर बताना है कि आपको क्या दिख रहा है और इसमें क्या हो रहा है।
- एक पेज पढ़ने के बाद अनुमान लगाना होगा कि आगे क्या होगा।
- जो शब्द समझ न आएँ या कठिन लगें, उन पर बातचीत करना होगी। और मैं तो मदद के लिए हूँ ही।

बच्चों ने एक-दूसरे की तरफ देखा और दो-तीन बच्चों ने पढ़ने के लिए हाथ उठाया। मैंने कनक की तरफ इशारा किया और उसने *भालू ने खेली फ़ुटबॉल* नाम की किताब को चुना।

कनक ने सभी बातों को ध्यान में रखते हुए बहुत ही सुन्दर तरीके से कहानी को पढ़ा। सभी बच्चे और पालक बड़े मज़े से कहानी सुन रहे थे और प्रतिक्रिया दे रहे थे। सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि कनक थोड़ा तुतलाकर बोलती है लेकिन किसी भी बच्चे ने उसका मज़ाक नहीं उड़ाया। यह सब देखकर मुझे अचम्भा हुआ, साथ ही खुश भी हुई कि बच्चों ने यह सब शायद हम बड़ों से ही सीखा है।

यह किताब रंग-बिरंगी नहीं है, पूरी काली और सफेद है। मैंने बच्चों से पूछा, "ज़्यादातर किताबें रंग-बिरंगी होती हैं लेकिन यह तो नहीं है, ऐसा क्यों?

बच्चों ने किताब को देखा और झट-से बोले, "अरे दीदी! इसमें कोहरा दिखाया गया है न इसीलिए यह किताब ऐसी है।" सभी हँस दिए।

कौन है आज़ाद?

इस कहानी को बड़े ही मज़ेदार तरीके से पढ़ा गया। कहानी के दौरान 'आज़ाद' शब्द आया तो मैंने पूछा, "आज़ाद होना क्या होता है?"

सभी बच्चे एक साथ बोलने लगे, "अपनी मर्ज़ी से काम करना।" कुछ बोले, "जब भूख लग रही हो तब खुद की मर्ज़ी से खाना खा लें।" "बिना किसी की अनुमति से कुछ भी कर लिया, वही आज़ादी है।"

"आप सभी आज़ाद हैं?" मेरा अगला सवाल आया।

इस पर झट-से जवाब आया, "हाँ दीदी, हम तो सब काम खुद की मर्ज़ी से करते हैं - भोजन करना हो या कुछ लेना हो।" मेरे कुछ बोलने से पहले ही दूसरे बच्चे ने बोल दिया, "अच्छा, खुद की मर्ज़ी से कपड़े खरीद लेती हो क्या?"

पहला बच्चा बोला, "तुम बताओ अपना, तुम हो क्या आज़ाद?"

"नहीं, बिलकुल भी नहीं।"

सभी ने साथ में बोला, "अरे! कैसे नहीं हो तुम आज़ाद?"

उसने जवाब देने शुरू किए, जैसे आज ही उसको बोलने का मौका मिला हो, "अपनी मर्ज़ी से छुट्टी नहीं कर सकते, न ही साइकिल चला सकते हैं, और-तो-और कहीं जा भी नहीं सकते, दीदी।"

उसके साथ दूसरे ने भी बोला, "समय से घर पर आना होता है और हम अपनी मर्ज़ी से कुछ भी नहीं कर सकते।"

एक-दूसरे से सवाल-जवाब करना वो भी तर्कों के साथ, यह बड़ा ही लाजवाब था। मैंने सभी से फिर से पूछा, "अब बताओ, कौन आज़ाद है?"

सभी बोले, "हम तो नहीं हैं।"

मैंने पूछा, "बनना है आज़ाद?"

"हाँ दीदी, बिलकुल।"

यह सुनकर सभी महिलाएँ हँस दीं। मैंने उनसे भी पूछा, "क्यों, आप भी आज़ाद नहीं हैं क्या?"

एक महिला ने बोला, "हम आज़ाद ही हैं मैडम जी।" इस पर बच्चे बोले, "अच्छा, कैसे हैं आप आज़ाद? बिना बताए कहीं जा सकती हैं क्या?"

उन्होंने आराम-से कहा, "हमारी आज़ादी तो तुम (बच्चे) ही हो।" उनके अलावा किसी भी महिला ने इस पर कुछ नहीं कहा, सिवाय एक-दूसरे के चेहरे देखने के।

मंजू कुमारी: *एकलव्य* होशंगाबाद में कार्यरत। बच्चों के साथ काम करने और उनके अनुभवों को लिखकर साझा करने का शौक।

सभी फोटो: मंजू कुमारी।